शोध-प्रारुप

कुँड़ुख़ साहित्य और उराँव जनजीवन में जतरा : एक अध्ययन

पीएच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारुप

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग,

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

वर्ष : 2025

शोध निर्देशक

डॉ0 बन्दे खलखो

सहायक प्राध्यापक,
विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

अमर उराँव

यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

भूमिका

भारत पूरे विश्व में विविधताओं के लिए जाना जाता है। यहाँ भाषायी, सांस्कृतिक, धार्मिक, जातीय आदि दृष्टियों से विभिन्नता पाई जाती है। इस देश में जितने राज्य हैं, प्रायः उतने ही जातीय विभिन्नताओं के साथ सबकी अलग-अलग भाषा संस्कृति भी है।

ठीक उसी प्रकार भारत के राज्यों में एक विलक्षण राज्य है - झारखंड। जो भौगोलिक, प्रजातीय, भाषायी, सांस्कृतिक एवं परंपरा की दृष्टि से अन्य राज्यों से भिन्न है। झारखंड राज्य में मुख्यतः तीन भाषा परिवार के लोग निवास करते हैं-

1. आर्य भाषा परिवार- नागपुरी, खोरठा, कुरमाली और पंचपरगानिया आदि।

2. आस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार- मुण्डारी, संथाली, खड़िया, हो, बिरहोरी, भूमिज, असुरी आदि।

3. द्रविड़ भाषा परिवार- कुँडुख़, मालतो आदि।

झारखंड के इन सभी भाषाओं में कुँडुख़ प्राचीनतम भाषा है। इस भाषा का संबंध दक्षिण भारत के द्रविड़ कुल की भाषा तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम आदि से है।

कुँडुख़ भाषा-भाषायी उराँव के महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक परंपरा को देखना हो तो उराँव गाँवों का जतरा सबसे अच्छा उदाहरण है। इन जतराओं में उराँव जनजीवन की पुरातन और आधुनिकीकरण, संस्कृति, परंपरा, पड़हा-व्यवस्था, समाज एवं उनके कार्य-व्यापार को देख सकते हैं। हम देख सकते हैं उनके नृत्य-गीत शैली, जीवन-शैली, पारंपरिक पड़हा-व्यवस्था, रीति-रिवाज और पारंपरिक वाद्ययंत्र। वाद्ययंत्र जैसे- मांदर, नगाड़ा, ढाँक, ढोल, घंटा-घंटी, शंख, ठेचका, करताल आदि के साथ पारंपरिक वेशभूषा के साथ मनमोहक नृत्य-संगीत करते हुए। ऐसा लगता है मानो पूरी प्रकृति भी उनके साथ झूम उठी हो। उराँव जनजीवन में जतरा किसी पर्व से कम नहीं। इनके बीच जतरा अभी जीवित और जीवंत है।

उराँव जतरा का आयोजन मौसम पर, मुख्य पर्वों के आधार पर किया जाता है एवं पड़हा जतरा का भी आयोजन किया जाता है। चैत माह के सरहुल उत्सव के पश्चात् वैशाख माह में बिसु सेंदरा का आयोजन होता है। तत्पश्चात् जेठ माह से जेठ जतरा का आयोजन आरंभ हो जाता है। उराँव जनजीवन में जेठ जतरा का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह वार्षिक नियम-कानून नीति निर्धारण अभियान (बिसु सेंदरा) के समाप्त होने पर इसका आयोजन आरंभ हो जाता है। उराँव जनजीवन के जतराओं में जेठ जतरा को सबसे प्राचीन माना जाता है। यह बेड़ो क्षेत्र में बिसु सेंदरा से लौटने के बाद सर्वप्रथम गड़गाँव में जेठ जतरा का आरंभ होता है, उसके बाद अन्य गाँवों में लगते हैं। उसी प्रकार माण्डर चान्हो क्षेत्र में बिसु सेंदरा के बाद सर्वप्रथम सोंस में जेठ जतरा लगता है। उराँव जतरा मौसम और पर्वों पर आधारित होता है।

जैसे मौसमों पर आधारित जतरा-

- जेठ माह में - जेट्ठे जतरा
- कार्तिक माह में - कतिक जतरा
- अगहन माह में - अगहन जतरा
- पूस माह में - पूस जतरा
- माघ माह में - माघे जतरा

जैसे पर्व-त्योहारों पर आधारित जतरा-

- कर्मोत्सव पश्चात् - ईन्द जतरा
- जितिया पर्व के अवसर पर - जितिया जतरा
- दसई पर्व के अवसर पर - दसई जतरा
- सोहराय पर्व के अवसर पर - सोहराय जतरा।

इस प्रकार उराँव जनजीवन में कई प्रकार के जतराओं का आयोजन देखा जाता है, लेकिन इनमें से मुड़मा जतरा एक विशेष और ऐतिहासिक जतरा है। इसका आयोजन झारखंड के राँची जिला के पश्चिम दिशा में मुड़मा नामक स्थान पर होता है। यह उराँव के बीच सबसे प्रचलित व ऐतिहासिक जतरा है।

प्रत्येक जतरा का आयोजन चाँद के हिसाब से और एक निश्चित तिथि व स्थान पर किया जाता है। यह मुख्य रूप से प्रकृति पूजा, ग्राम देवी-देवताओं और पूर्वजों के स्मृति में आयोजित किया जाता है। जतरा के आयोजन से पूर्व निश्चित स्थान के देवी-देवताओं को खुश करने के लिए पाहन द्वारा विधिवत पूजा अर्चना की जाती है। यह इनकी सदियों पुरानी परंपरा है। उराँव जनजीवन में जतरा केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं बल्कि यह उनकी सामूहिक पहचान, परंपरा, पड़हा संगठन, सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक सौहार्द का प्रतीक भी है। जतरा उराँव समाज के समृद्ध सांस्कृतिक नृत्य-गीत शैली, पारंपरिक जीवन शैली और पारंपरिक वेशभूषा को व्यापक स्तर पर प्रदर्शित करता है।

शोध विषय की प्रेरणाः-

झारखंड के पावन धरती (छोटानागपुर) मेरी जन्म भूमि एवं कर्मभूमि है। यहाँ के जातीय विभिन्नताओं में उराँव मुख्य जनजाति है, जिसकी अपनी भाषा है - कुँडुख़। मेरी मातृभाषा कुँडुख़ है। मेरा जन्म, लालन - पालन ग्रामीण परिवेश में हुआ, जहां प्रायः सभी लोग कुँडुख़ भाषा-भाषी हैं। मैंने बचपन से ही कुँडुख़ भाषा में बातचीत सुनना-बोलना और सीखना शुरू कर दिया। मुझे अपने मातृभाषा से लगाव होने के कारण गाँव के सभी लोगों से कुँडुख़ भाषा में ही बातचीत करता था। मैट्रिक के पश्चात् इंटर में कुँडुख़ भाषा का चुनाव किया। कुँडुख़ भाषा के मधुरता ने मुझे स्नातक में कुँडुख़ प्रतिष्ठा विषय रखने के लिए विवश कर दिया और इसी भाषा से मैंने स्नातकोत्तर तक की पढ़ाई पूरी की है। इस दौरान मुझे कुँडुख़ भाषा-साहित्य को गहराई से जानने-समझने का अवसर मिला। उराँव समाज के पर्व-त्योहार, रीति-रिवाज, संस्कार आदि की समझ बढ़ती गई। चूँकि ग्रामीण परिवेश में रहने के कारण गाँव के क्षेत्र में पर्व के अवसर पर लगने वाले उराँव जतरा को देखने-समझने का अवसर मिला। ग्रामीण क्षेत्रों में जेठ माह में लगने वाले पारंपरिक जतराओं को बचपन से ही देखते आया हूँ। उराँव जनजीवन में जतरा के महत्व, परंपरा की शुरुआत कैसे, क्यों और कब हुई? जैसे प्रश्नों ने मुझे शोध कार्य के लिए प्रेरित किया। फिर मैं शोध कार्य के लिए **"कुँडुख़ साहित्य और उराँव जनजीवन में जतरा : एक अध्ययन"** विषय को चुना। इस विषय पर कुछ दोस्तों तथा अध्यापकों से चर्चा किया तो उन्होंने मुझे उक्त विषय पर शोध के लिए प्रेरित किए।

परिकल्पनाः-

परिकल्पना शब्द का शाब्दिक अर्थ है- चारों ओर से चिंतन मनन करना। यह दो शब्दों से मिलकर बना है- परि$कल्पना। किसी भी शोध कार्य को सुनिश्चित रूप से पूर्ण करने हेतु पूर्व चिंतन करना ही, परिकल्पना कहलाती है। इसमें परिकल्पना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मेरे चयनित शोध विषय से संबंधित पुस्तक, सहायक सामग्री तथा आंकड़ों आदि की अनुपलब्धता जैसी समस्या उत्पन्न हो रही थी। परंतु मेरी इस परिकल्पना को व्यावहारिक रूप तब मिला जब जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय के पूर्व समन्वयक डॉ0 हरि उराँव, विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ0 बन्दे खलखो और शोधार्थी आदि ने मुझे इस कार्य के लिए प्रोत्साहित एवं उचित मार्गदर्शन किए।

उराँव लोगों के जतरा की सांस्कृतिक धरोहर, पारंपरिक नृत्य-गीत शैली, पारंपरिक वेशभूषा, जीवन शैली तथा कुँड़ुख़ भाषा-साहित्य के विकास में योगदान का अध्ययन- विश्लेषण एक महत्वपूर्ण कार्य है। इन परंपरागत, सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षण करने की विवेचना ने मुझे शोध कार्य करने के लिए उत्साहित किया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का औचित्यः-

किसी शोध कार्य का महत्व पूर्ण नहीं होता जब तक कि इस शोध की उपयोगिता देश एवं समाज के लिए सिद्ध नहीं होती।

साहित्यिक समीक्षाः-

मेरे जानकारी के अनुसार पूर्व शोध कार्य-

- उराँव, डॉ0 हरि- हिन्दी भाषा एवं कुँड़ुख़ भाषा की क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन, 2006
- भगत, डॉ0 रामकिशोर - कुँड़ुख़ संस्कार गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, 2012

- भगत, डॉ0 विमल चन्द- उराँव लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, 2012
- खलखो, डॉ0 बन्दे- कुँड़ुख़ शिष्ट साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन, 2017
- उराँव, डॉ0 तेतरु- उराँव लोक साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन, 2019
- कुजूर, डॉ0 ललिमा - कुँड़ुख़ लोकगीतों में जनजीवन, 2019
- कुमारी, डॉ0 कलावती - कुँड़ुख़ लोकगीतों का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन, 2020
- कुमारी, चाँदनी - उराँव के जतरा लोकगीत : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, 2024

उपरोक्त विषय तथा विभिन्न विधाओं में शोध कार्य हो चुका है। परंतु **"कुँड़ुख़ साहित्य और उराँव जनजीवन में जतरा : एक अध्ययन"** जैसे विषय पर अभी तक शोध कार्य नहीं हुआ है।

शोध विषय का उद्देश्यः-

उराँव जनजीवन में जतरा की सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण तथा कुँड़ुख़ भाषा- साहित्य में योगदान पर शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। इस शोध प्रबंध विषय का निम्नलिखित उद्देश्य है-

- उराँव जतरा के माध्यम से उनकी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षण और प्रसार का अवसर प्राप्त होगा।
- इससे युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।
- इससे भावी पीढ़ी को अपनी पारंपरिक गीत-नृत्य के संरक्षण के लिए नई आधार मिलेगी।
- जतरा के माध्यम से समाज में आपसी समन्वय और भाईचारा की भावना को बढ़ावा मिलेगा।
- कुँड़ुख़ भाषा-साहित्य के विकास में योगदान को बढ़ावा मिलेगा।
- जतरा के माध्यम से परंपरागत ज्ञान का आदान-प्रदान हो सकेगा।

- इससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा जिससे आर्थिक सशक्तिकरण का नया अवसर प्राप्त होगा।
- गैर जनजातीय तथा गैर आदिवासी समाज को उराँव के जीवन मूल्यों और परंपराओं को समझने का अवसर प्रदान करेगा।

शोध का महत्वः-

प्रस्तुत शोध प्रबंध से निम्नलिखित पहलुओं को जाना और संरक्षित किया जा सकेगा-

- उराँव जनजाति की अनूठी परंपराएँ, रीति-रिवाज, लोकगीत, लोकनृत्य, भाषा और वेशभूषा का दस्तावेजीकरण किया जा सकेगा।
- इससे सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने और भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने में मदद मिलेगा।
- उराँव जतरा में अनुसंधान से उनकी व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सकेगा।
- शोध के जरिए शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, सामाजिक बहिष्कार जैसे समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए नीतियां बनाने में सहायता मिलेगी।
- इससे सरकार और सामाजिक संगठनों को उचित योजनाएँ बनाने में मदद मिलेगी।
- शोध से कुँडुख़ भाषा-साहित्य के विकास में योगदान मिलेगा।
- इस शोध से कुँडुख़ भाषा-साहित्य में शोध कार्य के लिए नया मार्ग प्रशस्त होगा।
- इस शोध से भावी पीढ़ी को शोध कार्य हेतु प्रोत्साहन मिलेगा।

शोध प्रविधिः-

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने हेतु निम्नलिखित शोध प्रविधियों का उपयोग किया जाएगाः-

- साक्षात्कार विधि
- अवलोकन विधि
- प्रश्नावली विधि
- विश्लेषण विधि

शोध उपकरणः-

- कैमरा
- कंप्यूटर
- टेप रिकॉर्डर
- मोबाईल
- इंटरनेट
- अन्य

अध्यायीकरणः-

शोध विषय : कुँड़ुख़ साहित्य और उराँव जनजीवन में जतरा : एक अध्ययन

प्रस्तावना

क. शोध कार्य की प्रेरणा एवं औचित्य

ख. शोध की विषय वस्तु

ग. शोध कार्य की अध्ययन विधि

घ. विषय से संबंधित पूर्व शोध कार्यों का विवरण

ड. शोध विषय की उपादेयता

प्रथम अध्याय : उराँव जनजाति का स्वरूप

1.1 उराँव जनजाति का सामाजिक स्वरूप

1.2 उराँव जनजाति का सांस्कृतिक स्वरूप

1.3 उराँव जनजाति का धार्मिक स्वरूप

1.4 उराँव जनजाति का आर्थिक स्वरूप

1.5 उराँव जनजाति का शैक्षणिक स्वरूप

द्वितीय अध्याय : कुँड़ुख़ साहित्य में जतरा का इतिहास

2.1 प्राचीन इतिहास में जतरा

2.2 मध्यकालीन इतिहास में जतरा

2.3 आधुनिक इतिहास में जतरा

तृतीय अध्याय : उराँव जनजीवन में जतरा की परंपरा एवं मान्यताएँ

3.1 जतरा का अर्थ

3.2 जतरा की प्रकृति

3.3 जतरा की विशेषता

3.4 जतरा के प्रमुख अनुष्ठान

चतुर्थ अध्याय : उराँव जतरा के प्रकार

4.1 ऐतिहासिक जतरा

4.2 पड़हा जतरा

4.3 सामाजिक जतरा

4.4 धार्मिक जतरा

4.5 पर्व-त्योहार से संबंधित जतरा

4.6 मौसम आधारित जतरा

पंचम अध्याय : उराँव जतरा के विधि-विधान एवं महत्व

5.1 जतरा के विधि-विधान

- क. पूजा पद्धति
- ख. खान-पान
- ग. पारंपरिक वेशभूषा
- घ. गीत एवं नृत्य

5.2 जतरा का महत्व

- क. सामाजिक महत्व
- ख. सांस्कृतिक महत्व
- ग. धार्मिक महत्व
- घ. आर्थिक महत्व
- ड. शैक्षणिक महत्व
- च. राजनैतिक महत्व

षष्ठ अध्याय : जतरा का साहित्यक-सांस्कृतिक विश्लेषण

6.1 साहित्यिक विश्लेषण

6.2 सांस्कृतिक विश्लेषण

6.3 कुँड़ुख़ लोकमत, लोकविश्वास और निषेध

सप्तम अध्याय : वर्तमान संदर्भ में जतरा

7.1 आधुनिक परिवेश में जतरा की भूमिका

7.2 झारखंड की संस्कृति संरक्षण में जतरा का योगदान

7.3 जतरा के आयोजन में विभिन्न संस्थाओं/समितियों का योगदान

शोध निष्कर्ष

परिशिष्ट

1. आधार ग्रंथों की सूची
2. संदर्भ ग्रंथों की सूची
3. पत्र-पत्रिकाओं की सूची
4. साक्षात्कार सूची
5. चित्रावली

नोटः- आवश्यक होने पर शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

शोध निर्देशक

डॉ0 बन्दे खलखो
सहायक प्राध्यापक,
विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

अमर उराँव
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

आधार ग्रंथों की सूची

1. उराँव, डॉ0 हरि एवं भगत, महेश - कुँड़ुख़ लोक साहित्य - झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान- 2013

2. उराँव, डॉ0 तेतरु - उराँव लोक साहित्य : एक अध्ययन-झारखण्ड झारोखा- 2021

3. कुजूर, मिखाइल- उराँव संस्कृति- कैथोलिक प्रेस, रांची- 1993

4. कृष्ण, संजय- झारखंड के मेले- प्रभात प्रकाशन, दिल्ली -2016

5. खलखो, डॉ0 शान्ति- उराँव संस्कृति परिवर्तन एवं दिशाएँ- झारखंड झरोखा, राँची- 2009

6. गौंझू, डॉ0 गिरधारी राम- उराँव एवं सदान संस्कृति- पृथ्वी प्रकाशन, न्यू दिल्ली- 2018

7. बालमुकुन्द, डॉ0 बीरोत्तम- झारखण्ड के इतिहास एवं संस्कृति-बिहार हिन्द ग्रंथ अकादमी पटना-2006

8. भगत, डॉ0 रामकिशोर- कुँड़ुख़ संस्कार गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन-2021

9. राय, ए.सी.- दी उराँव ऑफ छोटा नागपुर- शान्ति इंटर प्रेस, दिल्ली- 1994

10. सिन्हा, डॉ0 अदित्य प्रसाद - झारखण्ड की जनजातीय लोक संस्कृति, पर्व-त्योहार एवं देवी-देवता- विकल्प प्रकाशन, सोनिया बिहार, दिल्ली- 2011

11. सिंह, कुँवर विलास-सामाजिक तथा सांस्कृतिक मानवशास्त्र-राजेन्द्र जायसवाल-1986

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. आर्चर, डब्लू. जी./लकड़ा, धर्मदास- लील ख़ो-रआ ख़े-ख़ेल भाग 1, 2-झारखंड झरोखा, राँची, 2015

2. उराँव, जीतू- कुँडुख़ (उराँव) का प्राचीन इतिहास- सुदर्शन प्रेस, रांची, 2015

3. उराँव, जीतू- सिन्धु घाटी कुँड़ुख़ सभ्यता और जनजातीय भूमिका, 2011

4. उराँव, प्रेमचन्द- ईन्द मेला एक अध्ययन- पृथ्वी प्रकाशन, न्यू दिल्ली, 2018

5. कुजूर, आशीष विजय- कुँडुख़ भाषा साहित्यः एक अध्ययन, 2007

6. खलखो, डॉ0 बन्दे- कुँडुख़ शिष्ट साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन- हिन्दराजी कुँडुख़ बकलूरिया खोंड़हा, नई दिल्ली, 2021

7. गौंझू, डॉ0 गिरधारी राम- ऋतु के रंग मांदर के संग- प्रिय साहित्य सदन, दिल्ली, 2018

8. तिर्की, भिखू- उराँव सरना धर्म और संस्कृति- झारखण्ड झारोखा, 2011

9. तिग्गा, जूलियस- कुँडुख़ भाषा, नृत्य कला और संस्कृति-2015

10. नयगस, सोमरा- कुँडुख़ जेट्ठे जतरा डण्डी- डांड़ कंडेरिया हलधर प्रेस, राँची, 1984

11. भगत, डॉ0 नारायण- छोटानागपुर के उराँव रीति-रिवाज- झारखण्ड झारोखा, 2010

12. भगत, भिखराम- आदिवासी पड़हा डहरे- राजी पड़हा टंटी, 1969

13. भगत, महेश- कुँड़ुख़ भाषा साहित्य का उद्भव और विकास-हिन्दराजी कुँडुख़ बकलूरिया खोड़हा, नई दिल्ली- 2017

14. मिश्र, शेखर सुधांश, एक्का विलियम- मुड़मा जतराः एक परिचय- अशोक प्रकाशन, राँची, 1996

15. लकड़ा, जॉन- आदिवासी संस्कृति तब और अब-

16. लकड़ा, बिहारी- आदिवासी और लरका आन्दोलन- बारह पड़हा कसपुर चीप प्रेस, रांची, 1966

17. लकड़ा, जॉन- कुँडुख़र गहि दव चालो-

18. लकड़ा, बिहारी- आदिवासियों का सांस्कृतिक इतिहास परिचय और उसका विकास कैसे हो, 1998

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

1. सरना फूल- डॉ0 हरि उराँव, सरना नवयुवक संघ, राँची, 1987
2. बकपून- डॉ0 हरि उराँव, गौतम बुद्ध मार्ग बरियातु, राँची, 2011
3. कुँडुख़ डहरे- कुँडुख़ लिटरेरी सोसाईटी ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 2007
4. पड़हा- डॉ0 बन्दे खलखो, सात पड़हा दरहा मर्चा चनगनी बेड़ो, राँची, 2015
5. अखड़ा- बंदना टेटे
6. सिनगी दई- महली लिवीनस तिर्की, नई दिल्ली, 1986
7. एजरआ- डॉ0 अगापित तिर्की, छत्तीसगढ़,1988
8. नाम कुँड़ख़त- डॉ0 अगापित तिर्की, छत्तीसगढ़, 1998
9. धुमकुड़िया- आहलाद तिर्की, काँके, राँची, 1949-52
10. प्रभात खबर - कोकर, राँची
11. हिन्दुस्तान- राँची
12. दैनिक भास्कर- राँची
13. दैनिक जागरण- राँची